राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान प्रणाली का कार्यान्वयन : पारंपरिक ज्ञान का एकीकरण

डॉ. प्रमोद यादव
विभागाध्यक्ष
राजनीति विज्ञान विभाग
सेठ आर. सी. एस. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

डॉ. अदिति तलवरे पटेल
सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)
राजनीति विज्ञान विभाग
शासकीय लोचन प्रसाद पाण्डेय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सारंगढ़, जिला सारंगढ़, बिलाईगढ़ (छ.ग.)

सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को समग्र, बहुआयामी, मूल्य-आधारित एवं वैश्विक दृष्टि से सशक्त बनाने का व्यापक खाका प्रस्तुत करती है। इस नीति की एक प्रमुख विशेषता भारतीय ज्ञान प्रणाली (IndianKnowledge System–IKS) को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर संरचनात्मक रूप से एकीकृत करना है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य भारतीय ज्ञान प्रणाली के स्वरूप, राष्ट्रीय शिक्षा नीति में उसके स्थान, तथा पारंपरिक ज्ञान के समकालीन शिक्षा सेएकीकरण की प्रक्रिया, संभावनाओं और चुनौतियों का विश्लेषण करना है। अध्ययन गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति परआधारित है, जिसमें नीति दस्तावेजों, शैक्षणिक साहित्य और समकालीन पहलुओं का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है।

निष्कर्षतः स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली का समुचित कार्यान्वयन शिक्षा को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध, नैतिक रूपसे सुदृढ़ और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बना सकता है।

मुख्य शब्द: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय ज्ञान प्रणाली, पारंपरिक ज्ञान, शिक्षा सुधार, सांस्कृतिक एकीकरण

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की प्रगति और सांस्कृतिक पहचान की आधारशिला होती है। भारतीय शिक्षा परंपरा प्राचीन काल से ही ज्ञान, मूल्य, आध्यात्मिकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अद्भुत समन्वय रही है। तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिलाजैसे विश्वविद्यालयों ने विश्व को ज्ञान का प्रकाश प्रदान किया। औपनिवेशिक काल में भारतीय शिक्षा प्रणाली में पश्चिमी प्रभाव बढ़ा, जिससे पारंपरिक ज्ञान-परंपराएँ मुख्यधारा से अलगहो गईं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस ऐतिहासिक विच्छेद को दूर करने का प्रयास करती है और भारतीय ज्ञान प्रणालीको पुनः शिक्षा के केंद्र में स्थापित करने की दिशा में ठोस कदम उठाती है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली का स्वरूप

भारतीय ज्ञान प्रणाली बहुआयामी और अंतर्विषयक है। इसके प्रमुख आयाम निम्नलिखित हैं—

1) दर्शन एवं अध्यात्म – वेद, उपनिषद, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदांत आदि।
2) विज्ञान एवं गणित – आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, सुश्रुत, चरक जैसे विद्वानों का योगदान।
3) आयुर्वेद एवं योग – समग्र स्वास्थ्य की अवधारणा।
4) पर्यावरणीय ज्ञान – प्रकृति के साथ संतुलित जीवन शैली।
5) कला एवं साहित्य – नाट्यशास्त्र, संगीत, स्थापत्य, लोककला।
6) सामाजिक एवं नैतिक मूल्य – 'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' जैसी जीवन-दृष्टि।
7) यह प्रणाली ज्ञान को केवल बौद्धिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक और नैतिक जीवन से जोड़ती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान प्रणाली का स्थान

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान प्रणाली को निम्न रूपों में समाहित किया गया है—

1) मातृभाषा में शिक्षा पर बल।
2) भारतीय कला, संस्कृति और परंपराओं का पाठ्यक्रम में समावेश।
3) IKS के लिए विशेष शोध एवं नवाचार केंद्रों की स्थापना।
4) अंतर्विषयक शिक्षा (Multidisciplinary Education)।
5) मूल्य-आधारित एवं अनुभवात्मक शिक्षण पद्धति।
6) नीति का उद्देश्य विद्यार्थियों में सांस्कृतिक आत्मगौरव, नैतिक चेतना एवं वैश्विक प्रतिस्पर्धा की क्षमता विकसित करना है।

पारंपरिक ज्ञान का समकालीन शिक्षा से एकीकरण

भारतीय ज्ञान प्रणाली का प्रभावी एकीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है—

1) पाठ्यक्रम पुनर्संरचना: पारंपरिक ग्रंथों एवं ज्ञान को वैज्ञानिक विश्लेषण के साथ पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना।
2) अंतर्विषयक दृष्टिकोण: योग और मनोविज्ञान, आयुर्वेद और जैव-विज्ञान, वास्तु और स्थापत्य विज्ञान जैसे
3) समन्वय।
4) शिक्षक प्रशिक्षण: शिक्षकों को भारतीय ज्ञान परंपरा से अवगत कराना एवं आधुनिक शिक्षण तकनीकों से जोड़ना।
5) अनुसंधान एवं नवाचार: IKS आधारित शोध परियोजनाओं को प्रोत्साहन देना।

कार्यान्वयन की चुनौतियाँ

1) प्रामाणिक स्रोतों का अभाव या विकृत व्याख्याएँ।
2) प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी।
3) पारंपरिक और आधुनिक ज्ञान के संतुलन में कठिनाई।
4) राजनीतिक या वैचारिक विवाद।
5) वैश्विक मानकों के अनुरूप प्रस्तुतीकरण की आवश्यकता।

संभावनाएँ एवं महत्व

1) सांस्कृतिक आत्मबोध और राष्ट्रीय एकता का सुदृढ़ीकरण।
2) मूल्य-आधारित शिक्षा से नैतिक समाज का निर्माण।
3) स्थानीय ज्ञान को वैश्विक मंच पर पहचान।
4) नवाचार और स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा।
5) आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को सशक्त आधार।

सुझाव

a. भारतीय ज्ञान प्रणाली पर आधारित प्रमाणित पाठ्य सामग्री का विकास।
b. विश्वविद्यालयों में IKS अध्ययन केंद्रों की स्थापना।
c. डिजिटल माध्यम से पारंपरिक ग्रंथों का संरक्षण।
d. अंतरराष्ट्रीय सहयोग एवं शोध को प्रोत्साहन।
e. नीति-स्तर पर सतत् मूल्यांकन एवं निगरानी।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा की मुख्यधारा में पुनः स्थापित करने का ऐतिहासिक प्रयास है। पारंपरिक ज्ञान का आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ संतुलित एकीकरण शिक्षा को अधिक समग्र, मूल्यपरक एवं वैश्विक प्रतिस्पर्धा के योग्य बना सकता है। यदि इसका कार्यान्वयन वैज्ञानिक, निष्पक्ष एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण से किया जाए, तो यह शिक्षा प्रणाली को केवल रोजगारोन्मुख ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का सशक्त माध्यम बना सकता है।

संदर्भ

1. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।
2. शर्मा, आर. (2018), भारतीय शिक्षा का इतिहास।
3. सिंह, के. (2019), भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा।
4. Tilak, J.B.G. (2021), Education Reforms in India।